आर्य समाज

संस्थापक : --- स्वामी दयानन्द सरस्वती
स्थापना : --- **10** अप्रैल **1875**
स्थल : --- मुंबई

19 वीं शताब्दी परिवर्तन आंदोलन और क्रांतियों की शताब्दी रही है। इस युग में जनता पराधीनता की पीड़ा से त्रस्त हो चुकी थी और उसके विरुद्ध कुछ करने के लिए सोच रही थी। ऐसे समय क्रांतिवीरों का संगठन निर्माण हुआ और अपनी जान की बाजी लगाकर पराधीनता के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गए। परिणाम स्वरूप सर्वत्र विद्रोह फूट पड़ा। ऐसे ही कठिन परिस्थिति में एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ। क्रांति के महापुरुष थे महर्षि दयानंद सरस्वती। उन्होने 1875 में मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। भारत में नवजागरण की दृष्टि से आर्य समाज के सामने कई चुनौतियां थी। भारतीय समाज को जागृत करने के लिए सबसे पहले धार्मिक संघर्ष को मिटाना आवश्यक था। जातिभेद को दूर करना, नारी की दयनीय अवस्था में सुधार लाना, लोगों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना आवश्यक था। आर्य समाज ने धार्मिक संघर्ष के साथ सामाजिक गुलामगिरी को नष्ट करने का महत्वपूर्ण कार्य किया तथा राष्ट्रीय स्वातंत्र की अपेक्षा सामाजिक स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया। आर्य समाज में सामाजिक, आध्यात्मिक संस्कृति का सुंदर समन्वय मिलता है। आर्य समाज के सिद्धांत वेदों से प्रभावित है उनकी विचारधारा और कार्य इस प्रकार है...

ब्रह्म -- आर्य समाज निर्गुण निराकार ब्रह्म के रूप को मानता है। अर्थात भगवान का कोई रूप रंग आकार नहीं होता है। उन्होंने ईश्वर के सगुण रूप का विरोध किया। ब्रह्मा निर्गुण निराकार है। वही आदि, अनंत सब कुछ है। वह न जन्म लेता हैं मरता है। ब्रह्म आराध्य है, ब्रह्म सत्य है, तेजोमय है, ब्रह्म को किसी एक रूप में नहीं बांधा जा सकता। आर्य समाज ने भगवान विष्णु के 10 अवतारों का विरोध किया। उनके मतानुसार अवतारों के कारण जन सामान्य का शोषण होता है। इसीलिए तो उन्होंने ब्रह्म को ही सर्वांगीण माना।

जीव -- आर्य समाज के अनुसार जीव ब्रह्मा का अंश होता है। जीवों की संख्या अनंत है। कर्म के अनुसार जीव को फल मिलता है और कर्म के आधार पर ही पुनर्जन्म मिलता है। जो व्यक्ति अच्छा कर्म करता है उसे अच्छा फल मिलता है। जो बुरा कर्म करता है उसे अगले जन्म में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसी प्रकार जीव और ब्रह्म का अलग-अलग तत्व केवल माया के कारण होता है। माया का आवरण हटने से आत्मा परमात्मा एक हो जाते है। जैसे कुंभ के फूटने से कुंभ का जल और तालाब का जल एक ही हो जाता है।

माया -- आर्य समाज में माया से सावधान रहने का उपदेश दिया है क्योंकि भगवान के मिलने के मार्ग में माया सबसे बड़ी बाधा है। वह महाठगिनी है जो मधुर वाणी बोल कर सभी को अपने चंगुल में फंसा देती है। संत कबीर ने उसे व्यभिचारिणी तक कहा है। सारा जगत के माया के बंधन में बंधा है। यदि कोई माया से बचना चाहता है तो उसे भी अपने जाल में फंसाने का प्रयत्न करती है। माया मनुष्य को विनाश की ओर ले जाती है। अतः आर्य समाज ने माया से बचने के लिए अवगुणों का त्याग करने की सलाह दी।

जगत -- आर्य समाज के अनुसार जगत अनादि अनंत है। जगत जीवो की कर्मभूमि है। मोक्ष प्राप्ति का कारण भी जगत ही है।

By Dr. Sangita Chitrakoti

जातिभेद का विरोध -- हमारे देश में कई समस्याएं हैं उनमें से ही एक है जाति प्रथा। इसे एक सामाजिक बुराई माना जाता है। जाति व्यवस्था और इससे जुड़ी समस्याएं हमारे समाज को परेशान करती हैं। हमारे देश में प्रतिभा के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं अतीत में इस आधारहीन प्रणाली के हाथों लोगों का बहुत नुकसान हुआ है। आर्य समाज ने जातिभेद का विरोध किया।

कर्मकांड का विरोध -- आर्य समाज ने कर्मकांड का विरोध किया। उनके मतानुसार कर्मकांड से समाज का शोषण होता है। ढोंग बाजी बढ़ती है। समाज खोखला बनता है। समाज में और अधर्म और अनैतिकता बढ़ती है इसलिए आर्य समाज ने कर्मकांड का विरोध किया और समानता तथा विश्व बंधुत्व का प्रचार प्रसार किया।

राष्ट्रीयता की भावना -- उस समय भारत पर अंग्रेजों की सत्ता थी। भारतीय समाज गुलामगिरी में अपना जीवन व्यतीत कर रहा था। तथा अन्याय अत्याचार सहन कर रहा था। ऐसी स्थिति में लोगों में राष्ट्रीयता की भावना निर्माण करने का काम आर्य समाज ने किया। आर्य समाज के सेवक राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते थे। लाला लाजपत राय, स्वामी सत्यदेव आर्य समाज से प्रभावित थे। आर्य समाज द्वारा स्थापित पाठशाला में समाज सुधार और राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।

आर्य समाज ने राष्ट्रीय एकात्मता को भी महत्व दिया। हमारे देश में अनेक जाति धर्म मनुष्य के लोग अलग-अलग प्रांतों में रहते हैं और अलग-अलग प्रांतों में लोगों की अलग-अलग भाषा भी है अर्थात हमारे देश में विविधता है। इस विविधता में एकता स्थापित करने का कार्य आर्य समाज ने किया।

सामाजिक भावना -- आर्य समाज जन जागरण करने वाली एक अग्रगण्य सामाजिक संस्था है जिसका उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने क्रूर परंपराओं का विरोध कर समानता का प्रसार किया। तत्कालीन समाज में अराजकता, अंधविश्वास, असंतोष, अन्याय, अत्याचार, बाल विवाह, नारी शोषण, विधवा शोषण, आदि अनेक समस्याओं का बोलबाला था। आर्य समाज ने इन परंपराओं का विरोध किया। लोगों का संगठन किया और समाज सुधारक की नींव रखी।

शिक्षा का प्रसार -- आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य था जनता का विकास। जनता का विकास करने का मुख्य माध्यम शिक्षा है इसलिए आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में अहं भूमिका निभाई। उन्होंने गुरुकुल व डीएवी कॉलेज स्थापित किया। स्त्री शिक्षा में आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा। 1885 के प्रारंभ में आर्य समाज ने अमृतसर में दो महिला महाविद्यालय की स्थापना की। 1889 में आर्य समाज ने फिरोजपुर में कन्या विद्यालय स्थापित किया।

आर्य समाज के नियम : -- आर्य समाज के 10 नियम है।

1. ईश्वर एक है तथा निराकार है। वह सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, निर्विकार, सर्वव्यापक, अजर, अमर,। पवित्र और सृष्टि कर्ता है अतः उसकी उपासना करने योग्य है।
2. वेद सच्चे ज्ञान के स्त्रोत है। वेदों को पढ़ना - पढ़ाना और सुनना - सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।
3. प्रत्येक व्यक्ति को सदा सत्य ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।
4. सब कार्य धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।

By Dr. Sangita Chitrakoti

5. संसार का उपकार करना यह समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात सब की शारीरिक आर्थिक और सामाजिक उन्नति करना।

6. प्रत्येक को अपने ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

7. समस्त अज्ञान का निमित्त कारण और उस के माध्यम से समस्त बोध ईश्वर है।

8. प्रत्येक को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

9. सभी से धर्मानुसार प्रीति पूर्वक यथा योग्य व्यवहार करना चाहिए।

10. व्यक्तिगत हितकारी विषयों में प्रत्येक व्यक्ति को आचरण की स्वतंत्रता रहे परंतु सामाजिक भलाई से संबंधित विषयों में सब में मतभेदों को भुला देना चाहिए।

निष्कर्ष -- निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आर्य समाज का उद्देश्य समस्त संसार की भलाई करना था। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्य समाज ने लोगों का शारीरिक आत्मिक और सामाजिक विकास किया। अज्ञानता का नाश करके चारों तरफ ज्ञान का प्रसार किया । आर्य समाज के सिद्धांतों ने लोगों को सही तरह से जीवन जीने की एक नई और सच्ची राह सिखाई।

By Dr. Sangita Chitrakoti